



Ram Lal Anand College
University of Delhi



अस्मि

Gender Sensitization Committee

invites research papers
on the theme

COVID PANDEMIC AND ITS IMPACT ON GENDER ROLES

Abstract Submission Date-
15th September 2021

Full Paper Submission Date-
25th September 2021

REGISTRATION LINK: :

<https://forms.gle/JQtTe3wF47wMHWb1A>

Cash prizes for best papers

First- Rs. 2000

Second- Rs. 1500

Third- Rs. 1000

For more information, please look
under the section- "RULES"

Ram Lal Anand College

Ram Lal Anand College was founded in the year 1964 by Late Shri Ram Lal Anand, a senior advocate in the Supreme Court of India, in response to the growing social demand in the sixties for providing educational opportunities at the university level. The college was initially managed by the Ram Lal Anand College Trust. It was later taken over by the University of Delhi. Since 1973, it has been run by the University of Delhi as a University Maintained Institution.

Being a multi-disciplinary, co-educational institution it has approximately 1500 students pursuing different courses in Arts, Commerce and Science streams. Ram Lal Anand College is administered by a statutory Governing Body as per the University Ordinances and legislated by the Executive Council of the University of Delhi.

राम लाल आनंद कॉलेज की स्थापना वर्ष 1964 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के एक वरिष्ठ अधिवक्ता स्वर्गीय श्री राम लाल आनंद ने विश्वविद्यालय स्तर पर शैक्षिक अवसर प्रदान करने के लिए साठ के दशक में बढ़ती सामाजिक मांग के जवाब में की थी। कॉलेज का प्रबंधन शुरू में राम लाल आनंद कॉलेज ट्रस्ट द्वारा किया जाता था। बाद में इसे दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने कब्जे में ले लिया। 1973 से, इसे दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा एक विश्वविद्यालय अनुरक्षित संस्थान के रूप में चलाया जा रहा है।

ASMI

The Gender Sensitization Committee

ASMI- (The gender sensitization committee of RLAC) is measured to make the students aware about gender related issues and individuals rights irrespective of their gender identities. The name "Asmi" is significant in defining the aim of the society. the word "asmi" means- "I am" or "I exist." Etymologically, it comes from the Sanskrit dhaatopadh "AS" which means -"to exist." The gender sensitization club of RLAC runs with the motto that everyone's existence is significant in the same way as ours is to us. It promotes the idea of inclusiveness and harmonious co-existence among each entity in the world for a better future.

अस्मि- रामलाल आनंद कॉलेज की लैंगिक अस्मिता संवेदीकरण समिति जेंडर सेंसिटाइजेशन की दिशा में एक कदम है। अस्मि शब्द संस्कृत के धातुरूप 'अस्' से निर्मित है जिसका अर्थ - सन्दर्भ है - मेरा अस्तित्व है। अपने नाम की तरह ही इस समिति का उद्देश्य सभी के अस्तित्व को मान्यता और महत्व दिलाना है। हमारी यह समिति सर्व- समावेशीकरण और सह- अस्तित्व के विचार को प्रस्तावित करती है। इसका उद्देश्य कॉलेज में विशेषकर युवा छात्रों में लैंगिक विभेद संबंधी मुद्दों और व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करना है। नयी पीढ़ी में अस्मिता के प्रति उठने वाली सहज उत्सुकताओं और असहज प्रश्नों को संबोधित करना भी इस समिति का दायित्व है।

THE CONCEPT

The year 2020 brought about immeasurable changes for all of us. Coronavirus pandemic upended the ways we used to live. The pandemic brought a worldwide lockdown. Never in living history has anyone experienced such a phenomenon. Many lost their jobs, and those who had jobs were working from home. This had a significant impact on gender as well. It would be interesting to explore the change of working patterns of men and women in the domestic space. A glimpse of gender parity in family life covered a large room on social media for some time. Still, did it improve the gender equations to recognise humanitarian values? What picture did the society portray of women managing "work at home" and "work from home?" How were the divergences in the social setup of gender normative behaviour assigned to men and other genders reflected in social media during this pandemic lockdown? How has this pandemic impacted the struggle for gender equality? What challenges did the constitutionally guaranteed equality and personal liberty would have faced in the shadow of this disaster? How did they cope with this lockdown who live on the edge of society and are often tagged as third or other gender?

Many such questions have arisen during the Covid-19 pandemic. In the changing scenario, it is necessary to answer these questions by collecting the scattered experiences of society to understand gender dynamics in today's context. To analyse the aspects of gender roles in such a challenging time, ASMI, the gender sensitisation committee of Ram Lal Anand College, invites research papers on the topic "Covid Pandemic and Its Impact on Gender Roles."

कोविड महामारी और लैंगिक भूमिकाओं पर इसका प्रभाव

२०२० का वर्ष हम सभी के लिए अपरिमेय परिवर्तनों का दौर लेकर आया। कोरोना वायरस से आई महामारी ने हमारे जीने के तरीकों को बदल दिया। इस महामारी ने दुनिया भर में तालाबंदी कर दी। इससे पहले कभी किसी ने ऐसी घटना का अनुभव नहीं किया था। अन्य सभी क्षेत्रों की तरह इसका असर लैंगिक स्थितियों पर भी पड़ा। लॉकडाउन में समाज की सभी स्थापित लैंगिक भूमिकाएं प्रगाढ़ रूप से प्रभावित हुईं। सभी घर में बंद थे। जिनके पास नौकरियां थी या बची रह गयी थी वे घरों से काम कर रहे थे। जो स्वरोजगारी थे अब लगभग बेरोजगार हो चूके थे। ऐसे में एक पारिवारिक इकाई में रहने वाले स्त्री पुरुषों के कामकाज के तरीकों में क्या कोई बदलाव हुआ होगा? परिवारों से दूर उन अनाम लैंगिक अस्मिताओं का क्या हुआ होगा जो हमेशा समाज के आर्थिक और भावनात्मक हाशियों पर समाज की आँखों से ओझल रहती हैं? क्या यह महामारी दुनिया के मानवीय संबंधों को बेहतर बना रही थी? सोशल मीडिया से ऊभरी वाली सकारात्मक सामाजिक स्वच्छन्द लैंगिक छवियां क्या समाज में कोई नयी बदलाव की लहर ला रही थी? 'घर पर काम' और 'घर से काम' दोनों को साथ-साथ करती लड़कियों और महिलाओं ने समाज की कैसी तस्वीर बनाई? अपनी निर्धारित लैंगिक भूमिकाओं से इतर भूमिकाओं को निभाने में पुरुषों और अन्य लिंग पहचानों से सामाजिक व्यवस्था में क्या विचलन दिखाई दिए? इस महामारी ने लैंगिक समानता के क्षेत्र में किए दशकों के प्रयासों के साथ क्या किया? एक बीमारी के डर और संघर्ष के तले बंद घरों में पनपते बचपन ने अपनी लैंगिक पहचान से जब सीधी नज़र मिलायी होगी तो क्या शिक्षा उसका संबल बन पायी होगी? संविधान प्रदत्त लैंगिक बराबरी, जीवन और निजी स्वतंत्रता के अधिकारों ने इस आपदा के क्षणों में कैसी चुनौतियों का सामना किया होगा? ऐसे कई प्रश्न कोविड महामारी के बाद पैदा हुई स्थितियों को समझने और इनके समाधान ढूँढने के लिए पूछे जाने ज़रूरी हैं। समाज के अनुभवों में बिखरे पड़े परिवर्तन के आंकड़ों को एकत्रित करना ज़रूरी है। इसी अध्ययन के लिए राम लाल आनंद कॉलेज की लैंगिक संवेदीकरण समिति अस्मि 'कोविड महामारी और लैंगिक भूमिकाओं पर इसका प्रभाव' विषय पर अन्तर महाविद्यालय शोध पत्र प्रस्तुति प्रतियोगिता में सभी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों से शोध पत्र आमंत्रित करती है।

RULES

for the paper presentation

- Submissions can be made either in Hindi or in English.
- Each paper should be accompanied with an abstract of around 300 words.
- Last date for abstract submission is 15th September 2021.
- Abstract should be accompanied by a scanned copy of their institutional id/fee receipt.
- Selected presenters will be informed within two days of abstract submission to submit full paper .
- Full Paper should have a maximum of 3000 words inclusive of citations.
- Presenters will have to submit the full paper by 25th September 2021.
- Shortlisted candidates will be invited for the presentation of their paper before judges. Date for the presentation will be announced after the successful submission of full papers .
- The selected papers shall later be published in ASMI E-journal of RLAC with the permission of the authors.
- Paper will be checked for plagiarism. And only those with 10% similarity or less will be considered for publication.
- The APA citation style should be strictly followed.
- The contributor should mandatorily mention their Name, email address, mobile number and institute of association on the paper.

शोध पत्र प्रस्तुत करने के नियम

- शोध पत्र हिन्दी या अंग्रेज़ी में हो सकता है।
- प्रत्येक शोध पत्र के साथ लगभग 300 शब्दों का सार होना चाहिए।
- सार प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 15 सितंबर 2021 है।
- प्रत्येक सार के साथ प्रस्तुतकर्ता की संस्थागत आईडी/फ़ीस रसीद की स्कैन कॉपी होनी चाहिए।
- प्रस्तुतकर्ताओं को शोध पत्र सार जमा करने के दो दिन के अंदर पूर्ण शोध पत्र जमा करने की सूचना प्रेषित कर दी जाएगी।
- पूर्ण शोध पत्र में संदर्भ सूची सहित अधिकतम 3000 शब्द होने चाहिए।
- प्रस्तुतकर्ताओं को 25 सितंबर 2021 तक पूर्ण शोध पत्र जमा करना होगा।
- एपीए उद्धरण शैली का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए।
- चयनित शोध पत्र के प्रस्तुतकर्ताओं को निर्णायक मंडल के समक्ष शोध पत्र प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया जाएगा। शोध पत्र प्रस्तुति की तिथि चयनित प्रस्तुतकर्ताओं को सूचित कर दी जाएगी।
- चयनित शोध पत्र रामलाल आनंद महाविद्यालय के ई-जर्नल 'अस्मि' में प्रकाशित किए जाएंगे। इसके लिए शोधकर्ता से मंजूरी ली जाएगी।
- साहित्यिक चोरी के लिए शोध पत्र की जाँच की जाएगी और केवल 10% समानता वाले शोध पत्र के प्रकाशन पर विचार किया जाएगा।
- योगदानकर्ता को शोध पत्र में अनिवार्य रूप से अपने नाम, संपर्क के लिए ईमेल, मोबाइल नंबर और अपनी संस्था के नाम का उल्लेख करना होगा।

Suggested sub-topics उप विषय

- Women in the domestic sphere during COVID-19
- Pandemic, Lockdown and Internalized Gender norms.
- Pandemic's impact on economic inequality and India's position in the Global Gender Gap Index.
- Out of school, the implication of learning from home on the girl child.
- Cyberspace and women in the ongoing pandemic.
- Gender disparity and health during Pandemic.
- कोविड-19 का समय और घरेलू परिधि में स्त्रियाँ
- महामारी, लॉकडाउन और लैंगिक भूमिकाओं में बदलाव
- आर्थिक असमानता पर महामारी का प्रभाव और वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक
- विद्यालय प्रांगण से दूर घर से पढ़ रही बालिकाओं की शिक्षा पर महामारी का प्रभाव
- महामारी, साइबर स्पेस और महिलाएँ
- महामारी के दौर में लैंगिक असमानता और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे

Given sub-topics for paper presentation are only indicative, not restrictive

शोध पत्र प्रस्तुति के लिए दिए गए उप विषय केवल संकेत हैं, बाध्यता नहीं।

ORGANIZING BOARD

Dr. Rakesh Kumar Gupta Dr. Shruti Anand Ms. Deepshikha Kumari
Principal *Convener* *Co-Convener*

For further queries, please contact-
Chetna Kala: 88009 68505
Saijal Bajaj: 76682 62552